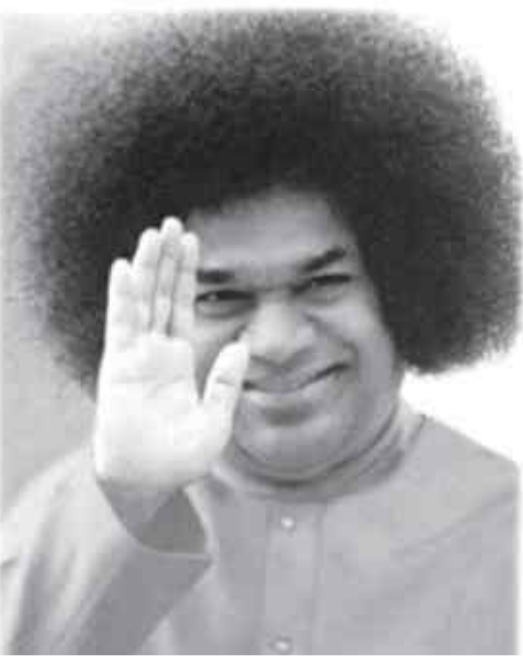


मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 14-02-2016 ● अंक-434 ● तारीख - 15 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - 08 ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



मनुष्य को सभी क्षेत्रों में कुछ नियम बनाने की जरूरत है, ताकि वह अपने दैनिक कार्यक्रम के संचालन में परिपक्वता लाकर जीवन जीने की प्रक्रिया का वास्तविक निर्देशन कर सके, क्योंकि ये भी आचार संहिता का हिस्सा है, इन्हें भी अनुशासन के रूप में देखना चाहिए।

नीति के श्लोक

**अनुबंधानपक्षेत सानुबन्धेषु कर्मसु।
सम्प्रधार्य च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत्।**
अर्थ:-किसी प्रयोजन से किये गए कर्मों में पहले प्रयोजन को समझ लेना चाहिए। खूब सोच-विचार कर काम करना चाहिए, जल्दबाजी से किसी काम का आरम्भ नहीं करना चाहिए।

**भक्ष्योत्तमप्रतिच्छन्नं मत्स्यो वडिशमायसम्।
लोभाभिपाती ग्रस्ते नानुबन्धमवेक्षते।।**
अर्थ:-मछली बढ़िया चारे से ढकी हुई लोहे की कांटी को लोभ में पड़कर निगल जाती है, उससे होने वाले परिणाम पर विचार नहीं करती।

क्या आप श्री जानते हैं?

भौरों का शरीर बहुत भारी होता है। इसलिए विज्ञान के नियमों के अनुसार वह उड़ नहीं सकता। लेकिन भौरों को इस बात का पता नहीं होता एवं वह यह मानता है की वह उड़ सकता है। इसलिए वह लगातार कोशिश करता जाता है और बार-बार असफल होने पर भी वह हार नहीं मानता क्योंकि वह यही सोचता है कि वह उड़ सकता है। आखिरकार भौरा उड़ने में सफल हो ही जाता है।

अनमोल वचन

आपको अपने भीतर से ही विकास करना होता है। कोई आपको सिखा नहीं सकता, कोई आपको आध्यात्मिक नहीं बना सकता। आपको सिखाने वाला और कोई नहीं, सिर्फ आपकी आत्मा ही है। जागें, उठें और तब तक न रुकें जब तक लक्ष्य तक न पहुंच जाएं।
-स्वामी विवेकानंद

मनोबल है सर्वोत्तम बल

परिस्थितियां अस्तित्व के लिए खतरा हैं, किंतु अस्तित्व के साथ परिस्थितियां जुड़ी हुई रहती हैं, यह निश्चित है। व्यक्ति किसी शुभ काम में लगता है तब परिस्थितियां उसका पीछा करती हैं। वे व्यक्ति को इस प्रकार झकझोर देती हैं कि एक बार तो वह निराश हो जाता है और उसका साहस टूट जाता है। उनका प्रहार इतना निर्मम होता है कि व्यक्ति स्वयं को असहाय-सा अनुभव करता है। परिस्थितियां बाहरी हो सकती हैं और आंतरिक भी। दोनों प्रकार की परिस्थितियां व्यक्ति को इतना कायर बना देती हैं कि वह पलायन की बात सोचने लगता है। वह परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देता है और मौत तक का वरण स्वीकार कर लेता है। किंतु मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि कसौटी के ये क्षण दृढ़ मनोबल से

गुजारने के होते हैं। शरीर बल और शस्त्र बल से ऊंचा कोई बल हो सकता है तो वह मनोबल ही है। जिस प्रकार बिना पसीने का पैसा स्थाई नहीं होता, इसी प्रकार बाधाओं का मुकाबला किए बिना लक्ष्य को स्थायी रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। परिस्थितियां जीवन को बिगाड़ती ही नहीं, अतः हर परिस्थिति का हर कीमत पर मुकाबला कर लक्ष्योन्मुख बनना चाहिए। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गतिशील रहने से एक दिन सारी परिस्थितियां स्वयं समाप्त हो जाती हैं। जब तक वे अवरोधक बनकर खड़ी हैं, पीछे हटने मात्र से समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। समग्र मनोबल और परिपूर्ण निष्ठा बटोर कर बाधाओं को निरस्त करने वाला व्यक्ति ही मंजिल तक पहुंच

आईओसी बनी देश की नंबर वन रिफाइनरी

पीएम नरेंद्र मोदी के पारादीप रिफाइनरी को राष्ट्र को समर्पित करने के साथ ही आईओसी देश की नंबर वन रिफाइनरी कंपनी बन गई। यह रिफाइनरी इंडियन ऑयल कारपोरेशन (आईओसी) की यूनिट है, जो 34,555 करोड़ रुपये की लागत से तैयार हुई है। सरकारी कंपनी आईओसी निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज को पछाड़ कर नंबर वन का रुतबा हासिल किया है। पारादीप रिफाइनरी 16 साल में पूरा हुआ है। 24 मई 2000 को तत्कालीन पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने इसकी आधारशिला रखी थी। यह आईओसी का नौवां संयंत्र है।



नामुनकिन कुछ भी नहीं

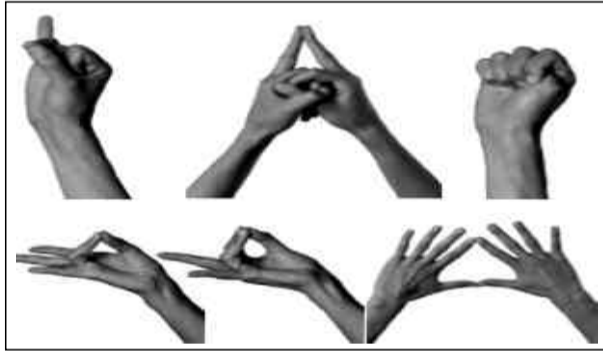
इस दुनिया में नामुनकिन कुछ भी नहीं। नामुनकिन हमारा भ्रम या गलत मान्यता है जो आखिरकार गलत साबित होती है। "हम वो सब कर सकते हैं, जो हम सोच सकते हैं और हम वो सब सोच सकते हैं जो आज तक हमने नहीं सोचा" हम गलत धारणाएँ बना लेते हैं और हमें इसी कारण कोई कार्य मुश्किल या असंभव लगता है। हम आज जो भी हैं, वह हमारी सोच का ही परिणाम है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं - "असंभव" या "नामुनकिन" हमारी सोच का ही परिणाम है। "हमारे साथ वैसा ही होता है, जैसा हम मानते हैं और विश्वास करते हैं।" यह हम पर निर्भर करता है कि हमें अपनी ही सोच का गुलाम रहना है या स्वतंत्र। अगर हम मानते हैं और स्वयं पर यह विश्वास करते हैं कि हम कुछ भी कर सकते हैं तो हमारे लिए नामुनकिन कुछ भी नहीं।

योग मुद्रा

दो या दो से अधिक उँगलियों के मेल से जो यौगिक क्रियाएँ संपन्न की जाती हैं, उन्हें योग मुद्रा कहा जाता है, जो इस प्रकार हैं-

- वायु मुद्रा**- यह मुद्रा तर्जनी को अँगूठे की जड़ में स्पर्श कराने से बनती है।
- शून्य मुद्रा**- यह मुद्रा बीच की उँगली मध्यिका को अँगूठे की जड़ में स्पर्श कराने से बनती है।
- पृथ्वी मुद्रा**- यह मुद्रा अनामिका को अँगूठे की जड़ में स्पर्श कराने से बनती है।
- प्राण मुद्रा**- यह मुद्रा अँगूठे से अनामिका एवं कनिष्का दोनों के स्पर्श से बनती है।
- ज्ञान मुद्रा**- यह मुद्रा अँगूठे को तर्जनी से स्पर्श कराने पर बनती है।
- वरुण मुद्रा**- यह मुद्रा दोनों हाथों की उँगलियों को आपस

में फँसाकर बाएँ अँगूठे को कनिष्का का स्पर्श कराने से बनती है। सभी मुद्राओं के लाभ अलग-अलग हैं। दोनों हाथों को जोड़कर जो मुद्रा बनती है, उसे प्रणाम मुद्रा कहते हैं। जब ये दोनों लिए हुए हाथ मस्तिष्क तक पहुँचते हैं तो प्रणाम मुद्रा बनती है। प्रणाम मुद्रा से मन शांत एवं चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न होती है। अतः आइए, हेलो, हाय, टाटा, बाय को छोड़कर प्रणाम मुद्रा अपनाएँ और चित्त को प्रसन्न रखें।



हमारी छोटी आंत (शरीर रचना)

छोटी आंत के तीन भाग होते हैं- आकार की ग्रहणी, कुंडलित मध्यभाग अग्रक्षुद्रांत्र और लंबी कुंडलित क्षुद्रांत्र। आमाशय का ग्रहणी में निकास जठरनिर्गम अवरोधिनी द्वारा नियंत्रित होता है। क्षुद्रांत्र बड़ी आंत में खुलती है जो अंधनाल, वृहदांत्र और मलाशय से बनी होती है। अंधनाल एक छोटा थैला है जिसमें कुछ सहजीवीय सूक्ष्मजीव रहते हैं। अंधनाल से एक अंगुली जैसा प्रवर्ध, परिशेषिका निकलता है जो एक अवशेषी अंग है। अंधनाल, बड़ी आंत में खुलती है।



चमत्कारी होता है गाय के घी का उपयोग

स्वास्थ्य व पर्यावरण सुरक्षा का अमोघ उपाय - गाय का घी देशी गाय का घी शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास एवं रोग-निवारण के साथ पर्यावरण-शुद्धि का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इसके सेवन से -

- 1) बल, वीर्य व आयुष्य बढ़ता है, पित्त शांत होता है।
- 2) स्त्री एवं पुरुष संबंधी अनेक समस्याएँ भी दूर हो जाती है।
- 3) अम्लपित्त (एसिडिटी) व कब्जियत मिटती है।
- 4) एक गिलास दूध में एक चम्मच गोघृत और मिश्री मिलाकर पीने से शारीरिक, मानसिक व दिमागी कमजोरी दूर होती है।
- 5) युवावस्था दीर्घकाल तक रहती है। काली गाय के घी से वृद्ध व्यक्ति भी युवा समान हो जाता है।
- 6) गर्भवती माँ घी - सेवन करे तो गर्भवस्थ शिशु बलवान, पुष्ट और बुद्धिमान बनता है।
- 7) गाय के घी का सेवन हृदय को

मजबूत बनाता है। यह कोलेस्ट्रॉल को नहीं बढ़ाता। दही को मथनी से मथकर बनाये गये मक्खन से बना घी हृदयरोगों में भी लाभदायी है। 8) देशी गाय के घी में कैसर से लड़ने व उसकी रोकथाम की आश्चर्यजनक क्षमता है। ध्यान दें : घी के अति सेवन से अजीर्ण होता है। प्रतिदिन 10 से 15 ग्राम घी पर्याप्त है।



अनुरोध

प्रिय पाठकगण,
"मन के जीते जीत सदा" समाचार पत्र को दिये गए अपार सहयोग हेतु आपका आभार। हमारा प्रयास सदैव पाठकों को तथ्यपूर्ण एवं रुचिकर सामग्री उपलब्ध कराने का रहा है। इसी क्रम में, यदि आप हमें पठनीय सामग्री संबंधी कोई सुझाव देना चाहें, अपनी स्वरचित कहानी/कविता भेजना चाहें अथवा आपके गाँव/शहर/राज्य से जुड़ी कोई ऐतिहासिक/धार्मिक/सांस्कृतिक जानकारी समाचार पत्र में प्रकाशित करवाना चाहें तो संपूर्ण जानकारी फोटो सहित हमें डाक से भेजें या ईमेल करें। अपूर्ण, तथ्यहीन जानकारी प्रकाशित नहीं की जाएगी तथा सामग्री प्रकाशित करने अथवा न करने का अधिकार प्रकाशक मण्डल के अधीन है। धन्यवाद।

पता :- ई-डी-71, बप्पा रावल नगर, सेक्टर - 6
हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
ई-मेल :- mankijeet2015@gmail.com

आवश्यक है आत्मविश्वास

- ◆ आत्मविश्वास किसी भी कार्य के लिए आवश्यक तत्व है। क्योंकि एक बड़ी खाई को दो छोटी छलांगों में पार नहीं किया जा सकता।
- ◆ आत्मविश्वास के साथ आप गगन चूम सकते हैं और आत्मविश्वास के बिना मामूली सी उपलब्धियाँ भी पकड़ से परे हैं।
- ◆ पेड़ की शाखा पर बैठा पंछी कभी भी इसलिए नहीं डरता कि डाल हिल रही है, क्योंकि पंछी डाली में नहीं अपने पंखों पर भरोसा करता है। -
- ◆ आत्मविश्वास हमारे उत्साह को जगाकर हमें जीवन में महान उपलब्धियों के मार्ग पर ले जाता है। -
- ◆ अनुभूतियों के सरोवर में, आत्म-विश्वास के कमाल खिलते हैं।

मानव मन के बोल

अटूट बन्धन रिश्तों के



प्रशान्त भैया उधर सेवा कार्यों में लगे हुए हैं। इन पंक्तियों को लिखे जाने की स्थिति में कल ही विकलांग विवाह 24 वां निःशक्त सामूहिक, निर्धन विवाह सर्वजाति विवाह, सर्व धर्म विवाह हुआ, 53 जोड़े विवाह के बंधनों में बंधे। आप ये पंक्तियां पढ़ते जाओ और इसके फोटो ग्राफ का आनन्द भी लेते जाओ आप तो, हां...हां.... तो भाइयों, तो महेन्द्र बाबू ऐसा है कि उस समय हम नारे लगाते थे, आपको तो याद ही है।

**हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा।
हम बदलेंगे-युग बदलेगा।**
इसीलिये कहा है हम बदलते कैसे हैं?स्वभाव बदलता है-भाई। रंग-रूप बदले ना बदले, रंग रूप के बदलने से क्या फरख पड़ता है-बेटा। हमारे पूज्य बापू जी कहा करते थे रामजी, रामजी बोलो बटाऊ जी, हरी भजन से तर जासी, बेटो मोजा माण्ड, मुसाफिर, कबहुक डाली नम जासी। मेवाड़ी में कहते हैं डाली का नमने का मतलब है कि भगवान की कृपा होना। डालियां नम गई, तो कृपा बरस गई। मुझे और आप को मनुष्य जीवन प्राप्त हो गया। महेन्द्र जी बाबू, प्रशान्त भैया, अन्सूया जी, तो मैं आप को अब ले आया था, मैं अपने आपको ले आया, जब हम गया जी गये। हम तो विष्णु पाद मन्दिर में वहां एक शिलालेख पढ़ा, विष्णुपाद मन्दिर गया तीर्थ का जिर्णोद्धार, अहिल्या बाई महारानी, हां अहिल्या जी महारानी ने करवाया। इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने, अहिल्या बाई होलकर ने करवाया। मैंने पढ़ा लाला.... बाबू..... देखो तो यहाँ तो सब आदरणीय जो तारीफ के काबिल हमारे उर्मिलाजी, त्याग मय, क्या बताऊँ आप को, मैं भाव में विभोर हो रहा हूँ।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

“अब मैं स्वयं के लिए मर गया। मैं अपने पूर्व जीवन के सब अवगुणों से मुक्त हो, ऐहिक जीवन छोड़, धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए उद्यत हो गया हूँ।”

श्री रामकृष्ण परमहंस के एक शिष्य अत्यन्त क्रोधी थे। छोटी-छोटी बात पर उनका क्रोध जाग्रत हो जाता था तथा एक बार क्रुद्ध होने पर देर तक बड़बड़ाते रहते थे। इसलिए लोग उन्हें छोड़ते रहते और वे दुःखी, उद्विग्न और कुढ़ते हुए गालियाँ बकते रहते थे।

एक बार श्रीरामकृष्ण परमहंस उन्हीं के पड़ोस में आकर ठहरे। उस भक्त की ऐसी दशा देखकर उन्होंने अपने अन्य शिष्यों के सामने उसका स्वभाव बदलने की इच्छा प्रकट की। इसी आशय से परमहंस जी ने उसे सन्यास देने का निश्चय किया। शिष्यों ने कहा, “ उसको सन्यास देना तो सन्यास-धर्म की विडम्बना है।” परन्तु श्रीरामकृष्ण परमहंस अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। शिष्य उसे बुला लाये और उसे सन्यास धर्म ग्रहण करने के लिए तैयार किया।

प्राचीन परिपाटी के अनुसार सन्यासी अपना श्राद्ध कर ऐसा संकल्प करता है कि “अब मैं स्वयं के लिए मर गया। मैं अपने पूर्व जीवन के सब अवगुणों से मुक्त हो, ऐहिक जीवन छोड़, धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए उद्यत हो गया हूँ।” यज्ञ हुआ और उस शिष्य ने अपने पूर्वजों का श्राद्ध कर अपना भी श्राद्ध अपने ही हाथों किया और यही संकल्प दोहराया। दूसरे दिन सन्यास वेश में जब वे गंगा-स्नान के लिए गए तो दुष्ट बालकों ने उन्हें कई प्रकार से तंग किया। पूजा के लिए एकत्र की गई सामग्री को बिखेर दिया पर वे चुपचाप सामग्री इकट्ठी कर अविचल भाव से ध्यान में मग्न हो गए। इस आश्चर्यजनक परिवर्तन को देखकर शिष्यों के आश्चर्य का पारावार न रहा। सन्यास धर्म के संस्कार मन से ग्रहण करने के कारण ही यह परिवर्तन आया। सभी मनुष्यों में संस्कारों का ऐसा ही प्रभाव पड़ता है।

भजनों पर झूमे भक्त



उदयपुर, लियों का गुड़ा स्थित 'नारायण सेवा संस्थान के सेवातीर्थ में चार दिवसीय भजन-सत्संग व प्रवचन कार्यक्रम में संस्थापक 'पदमश्री' श्री कैलाश 'मानव' व ग्वालियर के संत श्री शिवशंकर महाराज के प्रवचनों का बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने लाभ उठाया। कार्यक्रम में भजन मण्डली ने समधुर भजनों की प्रस्तुति दी। जिस पर भक्तजन खूब झूमे।



पेचिश (डिसेन्ट्री) का घरेलू इलाज

पेचिश बड़ी आंत का रोग है। इस रोग में बार-बार लेकिन थोड़ी मात्रा में मल होता है। बड़ी आंत में सूजन और घाव हो जाते हैं। दस्त होते समय पेट में मरोड़ के साथ कष्ट होता है। दस्त पतला मद्धम रंग का होता है। दस्त में आंव और रक्त भी मिले हुए हो सकते हैं। रोग की बढी हुई स्थिति में रोगी को ज्वर भी आता है और शरीर में पानी की कमी (डिहाईड्रेशन) हो जाती है।



होम रेमेडीज से निरापद, सफल उपचार किया जा सकता है—

01. दो चम्मच धनिया पीसकर एक कप पानी में उबालें। यह काढा मामूली गरम हालत में पीयें। ऐसा दिन में तीन बार करना चाहिये। कुछ ही दिनों में पेचिश ठीक होगी।
02. अनार के सूखे छिलके दूध में उबालें। जब तीसरा भाग रह जाए तो उतार लें। यह उपचार दिन में तीन बार प्रयोग करने से पेचिश से छुटकारा मिलता है।
03. तेज मसालेदार भोजन पदार्थ बिल्कुल न लें।
04. पेट पर गरम पानी की थेली रखने से

05. तरल भोजन लेना उपकारी है। कठोर भोजन पदार्थ शनै-शनै प्रारंभ करना चाहिये।
06. मूंग की दाल और चावल की बनी खिचडी परम् उपकारी भोजन है। इसे दही के साथ खाने से पेचिश शीघ्र नियंत्रित होती है।
07. एक चम्मच मैथी के बीजों का पावडर एक कटोरी दही में मिलाकर सेवन करें। दिन में तीन बार कुछ दिन लेने से पेचिश का निवारण होता है।
08. 3-4 नींबू का रस एक गिलास पानी में ऊबालें। इसे खाली पेट पीना चाहिये।

पेचिश का सफल उपचार है।

09. 250 ग्राम सौंफ के दो भाग करें। एक भाग सौंफ को तवे पर भून लें। दोनों भाग आपस में मिला दें। 250 ग्राम शकर को मिक्सर में पावडर बना लें। सौंफ और शक्कर पावडर मिलाकर शीशी में भर लें। यह मिश्रण 2 चम्मच दिन में 3-4 बार लेने से पेचिश में उपकार होता है।
10. इसबगोल की भूसी 2 चम्मच एक गिलास दही में मिलाएं। इसमें भूना हुआ जीरा मिलाकर सेवन करना पेचिश रोग में अत्यंत हितकर सिद्ध होता है।
11. दो भाग हरड और एक भाग लौंडी पीपल लेकर मिलाकर पावडर बना लें। 2-3 ग्राम पावडर भोजन उपरांत पानी के साथ लें। पेचिश की बढिया दवा है।
12. दो केले 150 ग्राम दही में मिलाकर दिन में दो बार कुछ रोज लेने से पेचिश रोग नष्ट हो जाता है।
13. अनार का रस अमीबिक डिसेन्ट्री याने आंव वाली पेचिश में फायदेमंद माना गया है।

बद्रीनाथ धाम

भारत के प्रसिद्ध चार धामों में द्वारिका, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर व बद्रीनाथ आते हैं। इन चार धामों का वर्णन वेदों व पुराणों तक में मिलता है। चार धामों के दर्शन का सौभाग्य पूर्व जन्म पुण्यों से ही प्राप्त होता है। इन्हीं चार धामों में से एक प्रसिद्ध धाम बद्रीनाथ धाम है। बद्रीनाथ धाम भगवान श्री विष्णु का धाम है। बद्रीनाथ धाम ऐसा धार्मिक स्थल है, जहां नर और नारायण दोनों मिलते हैं। धर्म शास्त्रों की मान्यता के अनुसार इसे विशालपुरी भी कहा जाता है। और बद्रीनाथ धाम में श्री विष्णु की पूजा होती है। इसीलिए इसे विष्णुधाम भी कहा जाता है। यह धाम हिमालय के सबसे पुराने तीर्थों में से एक है। मंदिर के मुख्य द्वार को सुन्दर चित्रकारी से सजाया गया है। मुख्य द्वार का नाम सिंहद्वार है। बद्रीनाथ मंदिर में चार भुजाओं वाली काली पत्थर की बहुत छोटी मूर्तियां हैं। यहां भगवान श्री विष्णु पद्मासन की मुद्रा में विराजमान हैं। बद्रीनाथ धाम से संबन्धित मान्यता के अनुसार इस धाम की स्थापना सतयुग में हुई थी। यहीं कारण है, कि इस धाम का माहात्म्य सभी प्रमुख शास्त्रों में पाया गया है। इस धाम में स्थापित श्री विष्णु की मूर्ति में मस्तक पर हीरा लगा है।

मूर्ति को सोने से जड़े मुकुट से सजाया गया है। यहां की मुख्य मूर्ति के पास अन्य अनेक मूर्तियां हैं। जिनमें नारायण, उद्धवजी, कुबेर व नारदजी की मूर्ति प्रमुख है। मंदिर के निकट ही एक कुंड है, जिसका जल सदैव गरम रहता है। बद्रीनाथ धाम भगवान श्री विष्णु का धाम है, इसीलिए इसे वैकुण्ठ की तरह माना जाता है। यह माना जाता है। कि महर्षि वेदव्याज जी ने यहीं पर महाभारत और श्रीमद्भागवत महान ग्रन्थों की रचना की है। यहां भगवान श्री कृष्ण को केशव के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त इस स्थान पर देव ऋषि नारद ने भी तपस्या की थी। देव ऋषि नारद के द्वारा तपस्या करने के कारण यह क्षेत्र शारदा क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। यहां आकर तपस्या करने वालों में उद्धव भी शामिल हैं। इन सभी की मूर्तियां यहां मंदिर में रखी गई हैं। मंदिर के निकट ही अन्य अनेक धार्मिक स्थल हैं। जिसमें नारद कुण्ड, पंचशिला, वसुधारा, ब्रह्माकपाल, सोमतीर्थ, माता मूर्ति, शेष नेत्र, चरण पादुका, अलकापुरी, पंचतीर्थ व गंगा संगम।

बद्रीनाथ धाम पौराणिक कथा

भगवान श्री विष्णु का विश्राम स्थल क्षीरसागर है। यहां ये शेषनाग पर लेटे रहते हैं। तथा देवी लक्ष्मी भगवान श्री विष्णु के पैर दबाती हैं। देवी से सदैव अपनी सेवा कराने की बात ऋषि नारद ने श्री विष्णु से बोल दी। ऋषि नारद की बात से भगवान विष्णु को दुःख पहुंचा और वे क्षीरसागर को छोड़ कर हिमालय के वनों में चले गये। वहां वे बैर खाकर तपस्या करते रहे। देवी लक्ष्मी को उन्होंने पहले ही नागकन्याओं के पास भेज दिया था। नागकन्याओं के पास से जब देवी लक्ष्मी लौटी तो, वे वहां भगवान श्री विष्णु को न पाकर परेशान हो गईं। कई जगहों पर श्री विष्णु को ढूँढने के बाद वे हिमालय में ढूँढने पहुंच गईं। वहां देवी को भगवान श्री विष्णु बेर के वनों में तपस्या करने नजर आये। इस पर देवी ने भगवान श्री विष्णु को बेर के स्वामी के नाम से संबोधित किया। तभी से इस धाम का नाम बद्रीनाथ पड़ा है। बद्रीनाथ धाम के कपाट वर्ष में छः माह बन्द रहते हैं। सामान्यतः मई माह में ये कपाट दर्शनों के लिये खुल जाते हैं। कपाट खुलने पर मंदिर की अखंड ज्योति के दर्शनों को विशेष कल्याणकारी कहा गया है।



मुन्व्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'

मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
अख्यक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी
अंपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी
अंपादन अख्योगी-घनश्याम त्रिठ नठौड

सावधानी रखें, स्वस्थ रहें

- ✘ कभी भी इंजेक्शन लगवाएं तो इस बात का खास ख्याल रखें कि सूई हमेशा नई हो, किसी संक्रमित व्यक्ति के शरीर में इस्तेमाल की जा चुकी सूई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है।
- ✘ बस, ट्रेन या मीटिंग में किसी बीमार व्यक्ति से आपको भी जुकाम और अन्य हवा से फैलने वाली बीमारियां लग सकती हैं। इनसे दूर रहें। खासकर वे जो शारीरिक रूप से कमजोर हैं क्योंकि ऐसे में बीमारी ज्यादा आसानी से आक्रमण करती है।
- ✘ पानी पीने से पहले यह पता करना जरूरी है कि वह पानी साफ है या नहीं, कई बीमारियों को फैलाने वाले सूक्ष्म जीव पानी में रहते हैं। अगर शक हो तो केवल मिनरल वॉटर ही लें।
- ✘ बच्चों को बहुत बचपन में ही संक्रमण के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए, उन्हें यह समझाना बहुत जरूरी है कि गंदगी उन्हें बीमार कर सकती है। खासकर शरीर की साफ सफाई की जानकारी अच्छे से दी जानी चाहिए।
- ✘ सड़क पर ठेलों पर बिकने वाला चटपटा खाना किसे अच्छा नहीं लगता लेकिन यह बीमारियों की जड़ हो सकता है। जितना हो सके इससे बचना चाहिए। फल और सलाद को खाने से पहले बहुत देर तक खुला नहीं रखना चाहिए, इन्हें काटते ही खा लेना चाहिए।



सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा सत्संग समिति-सियावास, बेगमगंज

दिनांक 20 से 26 फरवरी 2016

: समय :

प्रातः 11.00 से दोप. 03.00 बजे तक

स्थान : बालक उ. मा. विद्यालय परिसर
बैगमगंज, जिला-रायसेन (म.प्र.)

कथा व्यास : पं. श्री मनमोहन दूबे जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 09753475713, 9009611562
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

<p>कैलाश "मानव" मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>
<p>जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>		

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।